लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

सोमवार, 6 जनवरी 2025
वर्ष 6, अंक 47, पृष्ठ 16
3 राज्य, 6 संस्करण
मूल्य 6 रुपये

अमृत विचार

बरेली

एक सम्पूर्ण अखबार

PAGE NO: 05 BOTTOM

स्वर्ग जाने के लालच में राजा खुद फांसी पर चढ़ जाता है

कार्यालय संवाददाता, बरेली

रिद्धिमा में अंधेर नगरी चौपट राजा नाटक करते कलाकार। ● अमृत विचार

- रिद्धिमा में कलाकारों ने अंधेर नगरी चौपट राजा का मंचन किया

अमृत विचार : एसआरएमएस रिद्धिमा के प्रेक्षागृह में रविवार शाम भारतेंदु हरिश्चंद्र लिखित नाटक अंधेर नगरी चौपट राजा का मंचन हुआ। नाटक का निर्देशन विनायक कुमार श्रीवास्तव ने किया।

मंचन में दिखाया कि एक महंत अपने दो शिष्यों नारायण दास और गोवर्धन दास के साथ एक नगर में पहुंचता है। महंत शिष्यों को भिक्षा के लिए भेजता है। शिष्य गोवर्धन दास भिक्षा के लिए नगर के बाजार में जाता है। वह दुकानदार से नगर और यहां के राजा का नाम पूछता है। दुकानदार उसे नगर का नाम अंधेर नगरी और राजा का नाम चौपट बताता है। वह बताता है कि यहां पर सब सामान टका सेर में मिलता है। शिष्य गोवर्धन दास को लालच आ जाता है और इसी नगर में रहने का निश्चय कर लेता है। गुरु अपने एक शिष्य के साथ दूसरे शहर में चले जाते हैं। अगले दृश्य में राजा का दरबार दिखाया जाता है। जहां एक औरत फरियाद लेकर आती है कि कल्लू बनिया की दीवार गिरने से उसकी बकरी मर गई।

राजा सिपाही भेज कर कल्लू बनिया को बुलाता है। कल्लू कहता है कि उसकी कोई गलती नहीं है, मिस्त्री ने दीवार ठीक नहीं बनाई ,इसलिए दीवार गिर गई। राजा मिस्त्री को बुलवाता है। मिस्त्री दीवार गिरने की गलती के लिए मसाला और चूने वाले को दोषी बताता है। अब चूने वाले को बुलाया जाता है। चूने वाला भी भिश्ती को, भिश्ती कसाई को, कसाई गड़ेरिये को और गड़ेरिया कोतवाल को दोषी ठहराता है। राजा कोतवाल को फांसी की सजा सुना देता है। कोतवाल को फांसी पर लटका दिया जाता है, लेकिन उसकी गर्दन पतली होने की वजह से फांसी नहीं लग पाती। ऐसे में राजा उसकी सजा माफ कर देता है, लेकिन उसकी जगह किसी दूसरे को फांसी लगाने का फरमान जारी करता है। ऐसा व्यक्ति जो मोटा, तंदरुस्त हो और उसकी गर्दन फांसी के फंदे के नाप की हो और फंदे में ठीक से आ जाए। सिपाही फंदा लेकर नगर में जाते हैं और शिष्य गोवर्धन दास को पकड़ कर दरबार में लाते हैं। जहां उससे अंतिम इच्छा पूछी जाती है। गोवर्धन अपने गुरु को याद कर उनसे मिलने की इच्छा जताता है। गुरु को लाया जाता है। वह गोवर्धन दास के कान में कुछ कहते हैं। इससे गोवर्धन खुश होने का नाटक करता है और जल्द फांसी का फंदा लगाने को कहता है। इस बात से राजा हैरत में पड़ जाता है और मौत के डर के बजाय उससे खुश होने की वजह पूछता है। गोवर्धन बताता है कि गुरु ने बताया है कि यह शुभ मुहूर्त है और इसमें जो भी फांसी पर चढ़ेगा वह सीधे स्वर्ग जाएगा। स्वर्ग जाने के लालच में राजा खुद फांसी पर चढ़ जाता है। एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति, आदित्य मूर्ति, सुभाष मेहरा, डॉ. प्रभाकर गुप्ता आदि मौजूद रहे।